संत श्री आशारामजी आश्रम द्वारा प्रकाशित

ऋषि प्रसाद

मूल्य : ₹ ७ भाषा : हिन्दी
प्रकाशन दिनांक : १ अक्टूबर २०२३
वर्ष : ३३ अंक : ०४ (निरंतर अंक : ३७०)
पृष्ठ संख्या : ३६ (आवरण पृष्ठ सहित)

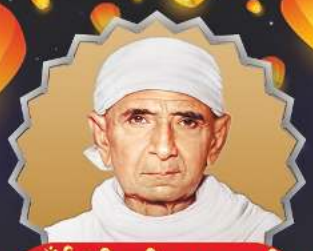

साँईं श्री लीलाशाहजी महाराज का महानिर्वाण दिवस : २१ नवम्बर

पढ़ें पृष्ठ १४

चल पड़े तो चल पड़े...

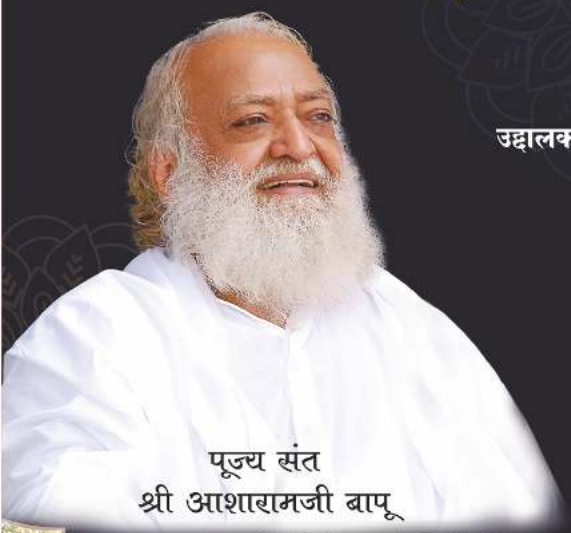

पूज्य संत
श्री आशारामजी बापू

धन्य हैं ऐसे महाविवेकी, परम वीर, पुण्यशाली भक्त-शिष्य जो परमार्थ के पथ पर चल पड़े तो चल पड़े... वित्त (परोपकार रहित अनर्थकारी धन) को छोड़ आत्मसम्पदा प्राप्त करने, नश्वर राज-पाट आदि को छोड़ आत्मराज्य पाने, सांसारिक विजय को छोड़ वास्तविक विजय **आत्मविजय** करने ।

गावो विश्वस्य मातरः ।
'गाय सम्पूर्ण विश्व की माता है ।'
''हम गाय का पालन-पोषण नहीं करते,
गाय हमारा पालन-पोषण करती है ।''
- पूज्य बापूजी

गोपाष्टमी : २० नवम्बर

पढ़ें पृष्ठ ३२

प्रकाश का पर्वपुंज... (दीपावली पर्व : १० से १५ नवम्बर)

पढ़ें पृष्ठ ११

ज्ञान की चिनगारी को फूँकते रहना । ज्योत जगाते रहना । प्रकाश बढ़ाते रहना । सूरज की किरण के जरिये सूरज की खबर पा लेना । सद्गुरुओं के प्रसाद के सहारे स्वयं सत्य की प्राप्ति तक पहुँच जाना । ऐसी हो मधुर दिवाली आपकी... - पूज्य बापूजी

श्रद्धा और भक्ति का मूर्तिमंत स्वरूप माँ महँगीबाजी

माँ महँगीबाजी का महानिर्वाण दिवस : ९ नवम्बर

पढ़ें पृष्ठ ९

लक्ष्मीप्राप्ति के लिए दीपावली पर करणीय प्रयोग ३३

ग्रहणकाल का विज्ञान... २८ अक्टूबर १०

इन स्वास्थ्य-घातक आहारों से बचें ३०

ॐ

दीपावली के निमित्त पूज्य बापूजी का मधुमय संदेश

आप प्रेम, उल्लास, आनंद व आत्म-अमृत बरसाओ !

धनतेरस, नरक चतुर्दशी, दिवाली, नूतन वर्ष, भाईदूज - इन पाँच पर्वों का पुंज दीपावली का उत्सव आपको उल्लसित करता है, आनंदित करता है। दुःख, चिंता, भय, शोक, घृणा पैदा करें ऐसे हीनता-दीनता के, हलके विचारों को निकालने व शांति, स्नेह, औदार्य और माधुर्य पैदा करें ऐसे नये विचार अपने चित्त में भरने की प्रेरणा देता है। आपको अपने सत्, चित् व आनंद स्वभाव को जगाने हेतु प्रोत्साहित करता है। सच्चिदानंद-स्वभाव आपके नेत्रों, वाणी, कर्मों के द्वारा छलक सकता है तो आप अपने नेत्रों के द्वारा आनंद, प्रसन्नता बरसाओ। अपनी वाणी के द्वारा निराश को आशा दो, हारे को हिम्मत दो; वाणी से आत्म-अमृत बरसाओ। विचारों से, शरीर से परहित के कार्य करके अपने अंदर छुपे हुए परम उदार परमात्मा का प्रेम, आनंद, माधुर्य, सूझबूझ बरसाओ। यह प्राकृतिक सिद्धांत है कि व्यक्ति जो देता है वही उसके पास रह जाता है। फूल जो रंग देते हैं वह रंग उनके पास रह जाता है।

Every action creates a reaction.

तो आप आनंद बाँटो, वाणी से, निगाहों से, हाव-भाव से मधुरता छलकाओ... भगवत्प्रेम बढ़ानेवाले गीत, नृत्य मधुरता छलकाने के साधन हैं। आपके अंदर आनंद का दरिया लहरा रहा है। खारे समुद्र में भी मधुरता लहरा रही है।

मधु क्षरन्ति सिन्धवः। (ऋग्वेद : मंडल १, सूक्त ९०, मंत्र ६)

सभीको सुख दो, सबका हित चाहो।

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः। सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद्दुःखभाग्भवेत्॥

मेरे लाले-लालियाँ ! दुःख तुम्हारा स्वभाव नहीं है और दुःख तुम चाहते भी नहीं हो। जैसे मुँह में ३२ दाँत हैं तो पत्थर के किंतु कभी ऐसा नहीं होता कि पत्थर पड़े हैं, निकालकर फेंक दें लेकिन कुछ आहार या सब्जी का तिनका फँस जाता है तो जीभ बार-बार वहीं जाती है, किसी-न-किसी चीज से उसको हटाते हैं क्योंकि वह स्वाभाविक नहीं है ऐसे ही दुःख आता है तो हटाते हैं कारण कि वह स्वाभाविक नहीं है। सुख आता है तो उसको हटाने की कभी कोशिश की क्या ? आनंद के लिए तो भागते हो ! आनंद के लिए अच्छा किया तो अच्छा परंतु बुरा करके भी चाहते तो आनंद ही हो। पर बुरे का नतीजा बुरा ही भुगतना पड़ता है इसलिए शास्त्रों ने नियम बनाये कि जो भविष्य में दुःख दे ऐसा सुख मत लो।

भूलकर भी उन खुशियों से मत खेलो। जिनके पीछे लगी हों गम की कतारें॥

तो कर्म का फल माधुर्य, आनंद, आह्लाद हो तथा आपके कर्म कर्म के प्रेरक, फलदाता और उनमें सामर्थ्य भरनेवाले परमात्मा के स्वभाव से जुड़ने के लिए हों। ॐ ॐ ॐ...

अपराधी बाहर घूम रहे हैं और निर्दोष संत जेल में क्यों ?

- स्वामी श्री चन्द्रदेवजी महाराज, भागवत कथाकार, प्रयागराज (उ.प्र.)

पढ़ें पृष्ठ ३३

ऋषि प्रसाद

हिन्दी, गुजराती, मराठी, ओड़िया, तेलुगु, कन्नड़, अंग्रेजी व बंगाली भाषाओं में प्रकाशित

वर्ष : ३३ अंक : ४ मूल्य : ₹ ७
भाषा : हिन्दी निरंतर अंक : ३७०
प्रकाशन दिनांक : १ अक्टूबर २०२३
पृष्ठ संख्या : ३६ (आवरण पृष्ठ सहित)
आश्विन-कार्तिक, वि.सं. २०८०

स्वामी : संत श्री आशारामजी आश्रम
प्रकाशक : धर्मेश जगराम सिंह चौहान
मुद्रक : राघवेन्द्र सुभाषचन्द्र गादा
प्रकाशन स्थल : संत श्री आशारामजी आश्रम, मोटेरा, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुजरात)
मुद्रण स्थल : हरि ॐ मैन्युफेक्चर्स, कुंजा मतरालियों, पौंटा साहिब, सिरमौर (हि.प्र.)-१७३०२५
सम्पादक : श्रीनिवास र. कुलकर्णी
सहसम्पादक : डॉ. प्रे.खो. मकवाणा
संरक्षक : श्री सुरेन्द्रनाथ भार्गव
पूर्व मुख्य न्यायाधीश, सिक्किम; पूर्व न्यायाधीश, राज. उच्च न्यायालय; पूर्व अध्यक्ष, मानवाधिकार आयोग, असम व मणिपुर

कृपया अपना सदस्यता शुल्क या अन्य किसी भी प्रकार की नकद राशि रजिस्टर्ड या साधारण डाक द्वारा न भेजें। इस माध्यम से कोई भी राशि गुम होने पर हमारी जिम्मेदारी नहीं रहेगी। **अपनी राशि मनीऑर्डर या डिमांड ड्राफ्ट ['हरि ओम मैन्युफेक्चरर्स' (Hari Om Manufactureres) के नाम अहमदाबाद में देय] द्वारा ही भेजने की कृपा करें।**

सम्पर्क पता : 'ऋषि प्रसाद', संत श्री आशारामजी आश्रम, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुज.)
फोन : (०७९) २७५०५०१०-११, ६१२१०८८८
केवल 'ऋषि प्रसाद' पूछताछ हेतु : (०७९) ६१२१०७४२
९५१२०८१०८१ 'Rishi Prasad'
ashramindia@ashram.org
www.ashram.orgwww.rishiprasad.org
www.asharamjibapu.org

सदस्यता शुल्क (डाक खर्च सहित) भारत में

अवधि	शुल्क
वार्षिक	₹ ७५
द्विवार्षिक	₹ १४०
पंचवार्षिक	₹ ३४०
आजीवन (१२ वर्ष)	₹ ७५०

विदेशों में

अवधि	सार्क देश	अन्य देश
वार्षिक	₹ ६००	US$20
द्विवार्षिक	₹ १२००	US$40
पंचवार्षिक	₹ ३०००	US$80
आजीवन (१२ वर्ष)	₹ ६०००	US$200

इस अंक में...

❖ मंगलमय संदेश ✻ विवेक कीजिये ४
❖ कथा प्रसंग ✻ चिंता चिता समान ७
❖ श्रद्धा और भक्ति का मूर्तिमंत स्वरूप माँ महँगीबाजी ९
❖ ग्रहणकाल का विज्ञान एवं करणीय-अकरणीय कर्म १०
❖ पर्व मांगल्य
✻ लौकिक दिवाली के साथ अलौकिक दिवाली मनाओ ११
✻ नूतन वर्ष के प्रथम दिन उठायें पुण्यमय दर्शन का लाभ १३
❖ ब्रह्मानंद के लवलेश से सुख की झलकें पाता है संसार १४
❖ पूज्य बापूजी के जीवन-प्रसंग
✻ गरीब, दुःखी, अभागा, निर्धन कोई नहीं कहा जा सकता १५
❖ जन्मों तक भटकाती भोगासक्ति १६
❖ विद्यार्थी संस्कार ✻ बालक नामदेव की सर्वात्मभावना १८
✻ विद्यार्थियों को सफल बनानेवाली सार कुंजियाँ १९
✻ सीखने योग्य बड़ा सबक - स्वामी विवेकानंदजी १९
❖ सच्ची सम्पत्ति २०
❖ भजनामृत ✻ देखो किसने क्या पाया... - संत पथिकजी २२
❖ आंतर आलोक ✻ संसार का मोह कैसे मिटे ? २३
❖ आनंदस्वरूप आत्मा अपने पास है फिर भी दुःखी क्यों ? २४
❖ महान कौन ? - परमहंस योगानंदजी २५
❖ संतों की हितभरी अनुभव-वाणी २६
❖ सेवा संजीवनी
✻ आज मैं जो कुछ भी हूँ बापूजी की बदौलत हूँ - मधुसूदन अग्रवाल २६
❖ जीवन जीने की कला ✻ सरल आसन एक, जिसके लाभ अनेक २७
❖ दिव्य आनंद व मोक्ष दाता योग : कुंडलिनी योग २८
❖ एकादशी माहात्म्य
✻ यमयातना से मुक्ति एवं स्वर्ग व मोक्ष दायक व्रत २९
❖ स्वास्थ्य प्रसाद ✻ इन स्वास्थ्य-घातक आहारों से बचें ३०
❖ गौ महिमा ✻ अत्यंत पवित्र एवं परम उपयोगी गाय ३२
❖ अनमोल कुंजियाँ
✻ लक्ष्मीप्राप्ति के लिए दीपावली पर करणीय प्रयोग ३३
❖ आप कहते हैं... ✻ अपराधी बाहर घूम रहे हैं और निर्दोष संत जेल में क्यों ?- स्वामी श्री चन्द्रदेवजी महाराज ३३
❖ पुण्यदायी तिथियाँ व योग ३४
❖ अक्षय फलदायी आँवला नवमी ३४

विभिन्न चैनलों पर पूज्य बापूजी का सत्संग

अनादि
रोज सुबह ६:३० व रात्रि ११ बजे टाटा स्काई/प्ले (चैनल नं. ११७०) व म.प्र., छ.ग., उ.खं. के विभिन्न केबल

DIGIANA DIVYAJYOTI
रोज रात्रि १० बजे म.प्र. में 'डिजियाना' केबल (चैनल नं. १०९)

Asharamji Bapu
सेवाकार्य भी
Asharamji Ashram
Mangalmay Digital

यूट्यूब चैनल्स

डाउनलोड करें : Rishi Prasad App (ऋषि प्रसाद की ऑनलाइन सदस्यता हेतु), Rishi Darshan App (ऋषि दर्शन विडियो मैगजीन की सदस्यता हेतु) एवं Mangalmay Digital App

चिंता चिता समान

(वर्तमान के तनावग्रस्त वातावरण में ये आम उद्गार हैं कि 'हमें कुटुम्ब की, समाज की, इसकी-उसकी चिंता करनी चाहिए ।' लेकिन समस्याएँ हैं कि बढ़ती ही जा रही हैं । ऐसा क्यों ? इस बारे में विवेक जागृत करती पूज्य बापूजी के मुखारविंद से निःसृत एक प्रेरक कथा :)

जितनी आंतरिक निश्चिंतता होती है उतना ही बुद्धि का चमत्कार प्रकट होता है । अतः जितना हो सके अपने जीवन में चिंता को महत्त्व नहीं देना । यथायोग्य पुरुषार्थ करना किंतु 'मेरे भविष्य का, पत्नी-परिवार का, बाल-बच्चों का क्या होगा... इसका क्या होगा, उसका क्या होगा...' इस चक्कर में मत पड़ना ।

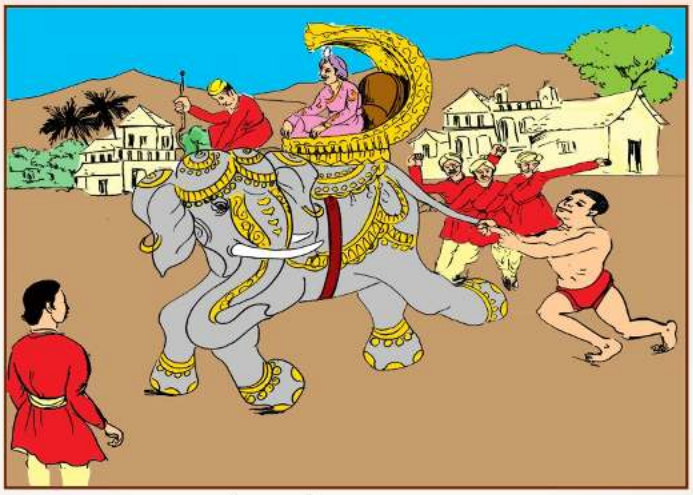

एक तगड़ा पहलवान था । बचपन से वह किसी गाँव से चला आया और अखाड़े में जम गया । दूध पीता, दंड-बैठक लगाता और हनुमानजी की कथा करता । बड़ा निष्फिक्र, निश्चिंत ! कमाने की, बाल-बच्चों की, नौकरी की... कोई चिंता नहीं थी उसे । उस पहलवान से राजा बड़ा परेशान हो गया था क्योंकि राजा जब हाथी पर सवार हो के निकलता था तो वह पहलवान हँसी-हँसी में हाथी की पूँछ पकड़ लेता था । महावत कितने ही प्रयास करे परंतु हाथी हिल नहीं पाता था । राजा की भी हँसी उड़ती । भीड़ इकट्ठी हो जाती और पहलवान का जयघोष होता । दूर-दूर के पहलवान उसकी यश-कीर्ति से प्रभावित हो गये । सारा गाँव उसे प्यार करता था । सारा गाँव पहलवान के पक्ष में था तो राजा उसको सजा कैसे करे, डाँटे कैसे ?

राजा बड़ी फिक्र में था । वह एक महात्मा के पास गया, पूरा वृत्तांत बता के पूछा : ''महाराज ! इस पहलवान को कैसे ठीक करें ? कोई उपाय बताइये । वह जहाँ रहता है वह अखाड़ा शहर के बीच में है । जब भी कहीं जाना होता है तो उसके आगे से गुजरना पड़ता है । मैं सोचता रहता हूँ, खबरें मँगवाता रहता हूँ कि जिस दिन पहलवान कहीं बाहर जाय उसी दिन मैं अपना बाहर जाने का कार्यक्रम बनाऊँ पर वह कहीं जाता भी नहीं ।''

बाबाजी ने कहा : ''चिंता मत करो, उस पहलवान को बुलाओ ।''

पहलवान आया । महात्मा ने कहा : ''देख भई ! तू दंड-बैठक मारता है, तेरे को गाँव के लोग दूध देते हैं, प्यार करते हैं लेकिन पागल ! तूने कभी सोचा कि यह जो जनता है वह आज 'वाह ! वाह !' करती है पर कल न भी करे, आज तेरे को खाना मिलता है पर कल न भी मिले तो तू क्या करेगा ?''

पहलवान : ''कल का तो मैंने आज तक सोचा नहीं ।''

''तू तो बेवकूफ है । भविष्य का विचार करो, कुछ अपना तिजोरी में रखो, कुछ काम-धंधा करो ।''

''मैं तो पढ़ा-लिखा भी नहीं हूँ, बस पहलवानी सीखा हूँ । दूध मिल जाता है, दंड-बैठक लगा देता हूँ और राजा साहब के हाथी की पूँछ पकड़ के जनता को रिझा देता हूँ ।''

लौकिक दिवाली के साथ अलौकिक दिवाली मनाओ

– पूज्य बापूजी

परमात्मा का स्वभाव है सत्, चित् और आनंद । सत् स्वभाव विवेक से, वेदांत ग्रंथों से जान लेते हैं, चेतन स्वभाव आँखों से दिखता ही है परंतु आनंद स्वभाव की जो हमारी आवश्यकता है उसके लिए हमारी वैदिक संस्कृति में उत्सवों की व्यवस्था है । दीपावली का त्यौहार उत्सवों का झुंड है । अन्य उत्सव कोई एक दिन का, कोई डेढ़ दिन का, कोई दो दिन का होता है परंतु ५ दिन का उत्सव तो यही है । दीपावली ५ पर्वों का झुमका है – धनतेरस, नरक चतुर्दशी, दिवाली, बलि प्रतिपदा, भाईदूज ।

धनतेरस : इस दिन गाय का, धन का पूजन होता है । सारे धनों में आत्मधन सर्वोपरि है, सारे सुखों में आत्मसुख सर्वोपरि है, सारे ज्ञानों में आत्मज्ञान सर्वोपरि है । पद्म पुराण व स्कंद पुराण में आता है कि 'धनतेरस को दीपदान करनेवाले की अकाल मृत्यु टल जाती है ।'

नरक चतुर्दशी : नरक चतुर्दशी की रात्रि जप व जागरण के लिए विशेष है । मंत्रसिद्धि-प्रदायक और मंत्र के प्रभाव को बढ़ानेवाली है । मंत्र को चैतन्यता प्रदान करनेवाली इस रात्रि को (विशेषकर शाम की संध्या के समय) यदि जप न किया जाय तो मंत्र मलिन हो जाता है और जप करते हैं तो मंत्र विशेष चैतन्यरूप हो जाता है । लौकिक मंत्रों में भी ऐसा देखा गया है ।जिसको भी जो मानते हैं उनको नरक चौदस और दीपावली की रात अपनी-अपनी साधना में, अपने-अपने मनोरथ की पूर्णता में सफलता दिलानेवाली होती है ।

इस दिन कोई गलती से भी सूरज उगने के बाद उठता है तो वर्षभर के उसके पुण्यों का प्रभाव, सत्कर्मों का प्रभाव कम हो जायेगा । परंतु सूर्योदय से पहले उठ जाता है और सूर्योदय से कुछ क्षण पहले तिल के तेल से मालिश करके स्नान कर लेता है तो उसके सत्त्व की अभिवृद्धि होगी ।होली, जन्माष्टमी, महाशिवरात्रि, नरक चतुर्दशी व दीपावली... इन रात्रियों में जो संसारी व्यवहार (पति-पत्नी का शारीरिक व्यवहार) करता है उसका आयुष्य और स्वास्थ्य क्षीण हो जाता है ।

दिवाली : तुम्हारे जीवन में हर रोज दिवाली आयेगी तो मैं संतुष्ट रहूँगा । सामाजिक दिवाली तो ३६४ दिन के बाद आती है । गुरुओं की दिवाली जोड़ दें तो हर रोज दिवाली, हर हाल दिवाली ! दिवाली के दिनों में ४ काम किये जाते हैं :

(१) घर को साफ-सुथरा करना, कचरा निकालना

(२) नयी चीज लाना

(३) प्रकाश करना

(४) मिठाई खाना-खिलाना ।

जनसाधारण के लिए तो ये ४ काम हैं लेकिन साधक को इन ४ कामों को सँवारना पड़ेगा ।

पहली बात, **घर की सफाई ।** शरीर के घर की सफाई ठीक है किंतु उसके साथ-साथ अपने घर की भी सफाई करो । ईंट, चूने से जो बनता है वह घर तुम्हारा नहीं, शरीर का है । हृदय तुम्हारा

ब्रह्मानंद के लवलेश से सुख की झलकें पाता है संसार

– पूज्य बापूजी

गुरुकृपा हि केवलं...

जन्म-जन्म का भटका हुआ जीवात्मा परमात्मा के रस से आनंदित हो जाय, बस यही संत-महापुरुषों की प्रेमभरी कृपा है । माँ की ममताभरी कृपा है, पिता की अनुशासनवाली कृपा है, भगवान का जैसा भजन करो वैसी कृपा है परंतु ब्रह्मवेत्ता संत, सद्गुरु की ऐसी करुणा-कृपा है कि पुचकार के, ऐसे-वैसे करते-करते वे लोगों को ईश्वर के रास्ते चलाते हैं, यही सद्भाव रखकर कि जो मुझे मिला है वह इनको मिल जाय ।

ब्रह्मलीन भगवत्पाद साँईं श्री लीलाशाहजी महाराज का महानिर्वाण दिवस २१ नवम्बर

ऐ हे !मैंने कभी सोचा नहीं था कि मेरे गुरुजी मुझे इतनी ऊँचाई पर पहुँचायेंगे कि मैं बोलूँ और दुनिया के कई-कई देशों में लोग सुनने के लिए वेबसाइट खोलकर बैठ जायें, हजारों-लाखों लोग घंटोंभर बापू के इंतजार में बैठे रहें । मेरे को गुरुजी ऐसा बनायेंगे ऐसा मैं सोच भी नहीं सकता था । मैंने ऐसा बनने की कोई कोशिश भी नहीं की और ऐसा बनने की कोशिश करता तो हो भी नहीं सकता था ।यह तो

गुरुकृपा हि केवलं शिष्यस्य परं मंगलम् ।

मेरा स्वभाव इतनी प्रवृत्ति से बिल्कुल विपरीत था । गुरुजी जब सत्संग की बात करते, भगवच्चर्चा करते तो मेरी आँखें बंद हो जाती थीं । एक बार गुरुजी ने डाँट लगायी : ''क्या करता है !''

फिर उसके बाद कभी सत्संग-श्रवण के समय आँखें बंद करके ध्यान नहीं लगाया । देखते-देखते सुनता था । गुरुजी सत्संग में बोलते थे : ''**ख़लक जी ख़िज़मत खां न भायां बंदगी बेहतर.**

जनता की ख़िज़मत (सेवा) से बढ़कर मैं समाधि को, बंदगी को ऊँचा नहीं मानता हूँ ।'' ऐसा बोलते-बोलते संस्कार डालते । बोलते भक्तों के सामने फिर मेरे ऊपर दृष्टि डालते । मैं भी समझ जाता कि यह मेरी तरफ इशारा है । ऐसी करुणामयी दृष्टि बरसती, ऐसी-ऐसी बातें आतीं कि क्या बताऊँ !

गुरुदेव के हाथ की प्रसादी

अपौरुषेय ज्ञान में, तत्त्वज्ञान में जो जगे हैं और उसमें जिनकी प्रीति है उन महापुरुषों का दिया हुआ पानी या अन्य कोई प्रसाद चित्त को आत्मानंद की मस्ती से सम्पन्न कर देता है, अंतःकरण में अपौरुषेय तत्त्व चमचमाने लगता है । समझ में नहीं आये तब भी महापुरुष की दी हुई चीज का अनादर नहीं करना चाहिए । हम उनके पास ले जाते हैं तो मिठाई होती है, फल-फूल होता है लेकिन उनके हाथ से जब मिठाई का टुकड़ा मिल गया तो आपके १०० रुपये की मिठाई से भी वह ज्यादा कीमती हो जाता है । वह मिठाई नहीं रही, अब महाप्रसाद हो गया, शुभ भाव हो गया, महासंकल्प हो गया । अन्य लोग बोलते हैं तो भाषण है, प्रवचन है परंतु गुरु बोलते हैं तो सत्संग है, भगवत्प्रसाद है और उस प्रसाद से सारे दुःखों का अंत करनेवाली मति बनती है देर-सवेर ।

मैंने मेरे जीवन में मेरे गुरुदेव के हाथ की प्रसादी का बहुत बार अनुभव किया । लोग सेवफल दे जाते थे । एक बार रात्रि को १०:३०-११ बजे हम विदा ले रहे थे । गुरुदेव ने देखा कि अब कहाँ खायेगा-पियेगा तो उठाकर ३-४ सेव दे दिये, बोले : ''भई ! दूर जायेगा, अब खाने-पीने का ये

विद्यार्थी संस्कार

बालक नामदेव की सर्वात्मभावना - पूज्य बापूजी

(संत नामदेवजी जयंती : २६ अक्टूबर)

बालक नामदेव पलाश की छाल लेने गये थे। घर आये तो उनकी माँ गोणाई की दृष्टि एकाएक उनकी धोती पर पड़ी। नामदेव की धोती खून से रँगी हुई थी।

माँ ने पूछा : ''बेटा ! तेरी धोती को क्या हो गया है ? यह खून कहाँ से लगा ?''

नामदेव बोले : ''जरा मैंने प्रयोग किया था, उसका खून लगा है।''

''क्या प्रयोग किया था ?''

''माँ ! तुमने कहा था कि पलाश की छाल उतार के लाओ, मुझे काढ़ा बनाना है तो मैं पलाश के वृक्षों की छाल उतारने गया था। मैंने एकांत में जाकर सोचा कि 'उन वृक्षों की छाल तो मैंने उतारी पर उनमें भी तो जीव है। भले वे पिछले जन्म में भोगी रहे होंगे, कैसे भी रहे होंगे लेकिन प्राण तो उनमें भी हैं। उनमें जीव है और हममें भी जीव है। उनको भी जीने की इच्छा है, हमको भी जीने की इच्छा है। तो उनकी छाल उतारने से उनको कैसी पीड़ा हुई होगी उसको मैं जरा अनुभव करूँ।' इसलिए मैंने कुल्हाड़े से जरा अपनी थोड़ी खाल उतार दी।''

माँ ने धोती हटायी तो चौंकी : 'ओ हो ! टाँग को कितना चीरा लगा हुआ है किंतु चेहरे पर पूर्ववत् समता, शांति है।'

माँ बोलती है : ''बेटा नामदेव ! तू वृक्ष में भी अपना आत्मा देखता है। दूसरे के चित्त में जो कष्ट होता है उसे अपने जैसा ही अनुभव करता है, अपने जैसा ही चैतन्य दूसरे के अंदर है, अपने जैसी ही जीने की भावना दूसरों के अंदर भी है। ऐसी उत्तम तेरी समझ है। जो दूसरों में अपने को देखता है उसे संत ही कहा जाता है बेटा ! तू एक महान संत बनेगा।''

आगे चलकर वे ही बालक संत नामदेवजी के नाम से विश्वविख्यात हुए।

प्रेरक पंक्तियाँ

न भूलें

औरों का उपकार न भूलें,
न परमेश्वर की प्रीति।
अपना किया अपकार न भूलें,
ताकि हो न दोबारा गलती ।।
सद्गुरु की करुणा न भूलें,
बढ़ती रहे गुरुभक्ति।
सत्संग और साधना न भूलें,
मिलती जिससे मुक्ति ।।

आनंदस्वरूप आत्मा अपने पास है फिर भी दुःखी क्यों ?

– पूज्य बापूजी

भगवान शिवजी पार्वतीजी से कहते हैं :

उमा कहउँ मैं अनुभव अपना ।
सत हरि भजनु जगत सब सपना ।।

हरि का भजन सत्य है, यह जगत सपना है । बार-बार चिंतन करो कि 'यह सपना है, सपना है... ।' जितना एकांत में जप-तप से लाभ होता है उतना संसार में बड़े राज्य करने से, संसार का वैभव सँभालने और भोगने से नहीं होता है । और जप-तप करने से उतना लाभ नहीं होता जितना सत्संग से लाभ होता है । और सत्संग में भी स्वरूप-अनुसंधान से जो लाभ होता है वह किसीसे नहीं होता । इसलिए बार-बार स्वरूप-अनुसंधान करते रहो । ॐ... ॐ... ॐ...

देखे हुए, भोगे हुए में से आस्था हटा दो । जो देखा, जो भोगा – अच्छा भोगा, बुरा भोगा, अच्छा देखा, बुरा देखा... सबको मार गोली, सब सपना है । पीछे की बात याद कर-करके बिखरो मत । 'वह बहुत बढ़िया जगह थी, यह ऐसा था, वह ऐसा था... ।' तो ये वृत्तियाँ उठती हैं, वृत्ति-व्याप्ति, फल-व्याप्ति होती है । आप बाहर बिखर जाते हो, अपने घर में (आत्मा में) नहीं आ सकते ।

इकबाल हुसैन दारू के अड्डे पर गया । उसने शराब पी, खूब पी और एकदम नशे में चूर हो गया । घर के लिए निकला लेकिन उसे घर नहीं मिल रहा था । लालटेन को, सड़क को गालियाँ देता हुआ अपना घर खोजता-खोजता अर्धरात्रि तक ठोकरें खाता-खाता बड़ी मुश्किल से कहीं शव की नाईं, थक के पड़ा और दैवयोग से वही उसका घर था । सुबह उठा तो देखा कि दारू के अड्डे का नौकर हाथ में लालटेन लिये आ रहा है । उसको हुआ कि 'यह लालटेन तो मेरा है, इसके हाथ में कैसे ?'

नौकर ने कहा : ''महाशय ! रात को आप अड्डे पर ही लालटेन भूल गये थे और हमारा तोते का खाली पिंजरा लालटेन समझ के लेकर आये ।''

वह समझता था कि 'मेरे हाथ में लालटेन है और घर क्यों नहीं मिलता ?' पर लालटेन के बदले पिंजरा था । ऐसे ही अपनी जो वृत्ति है वह चैतन्य को नहीं देखती, वह लालटेन वृत्ति (ब्रह्माकार वृत्ति) नहीं है, संसाररूपी पिंजराकार वृत्ति है वह । चैतन्यरूपी लालटेन की रोशनी में सत्य को न खोजकर संसाररूपी पिंजरे में सत्य को खोजती है ।

संत कबीरजी कहते हैं :

भटक मुआ भेदु बिना पावे कौन उपाय ।
खोजत-खोजत युग गये पाव कोस घर आय ।।

अपने वास्तविक स्वरूप का, सुखस्वरूप आत्मा का ज्ञान न होने से युगों से भटक रहे हैं फिर कोई गरबा गाते हैं, कोई कुछ करते हैं किंतु संसाररूपी पिंजरा हाथ में रखते हैं, चैतन्यरूपी लालटेन रखनी चाहिए न ! जाना चाहते हैं अपने घर में, सुखस्वरूप आत्मा में लेकिन थक के बेचारे पड़ जाते हैं । फिर जब नशा उतरता है, जीवन की शाम होती है तब पूछो कि 'क्या

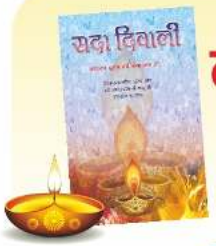

दीपावली पर विशेष (सदा दिवाली, पर्वों का पुंज : दीपावली)

पाँच दिन नहीं, जीवन में सदा दिवाली हो इस हेतु तथा सुख-समृद्धि एवं लक्ष्मी की प्राप्ति की कुंजियों के लिए अवश्य पढ़ें ये कल्याणकारी सत्साहित्य

युवा सेवा संघ द्वारा निकाली गयीं देशभक्ति यात्राएँ

कपूर

✻ पूजा, आरती आदि धार्मिक कार्यों में यह उपयोगी है। ✻ वातावरण को शुद्ध करनेवाला है। ✻ संक्रामक रोगों से सुरक्षा हेतु कपूर की पोटली बनाकर उसे सूँघना लाभदायी है।

शुद्ध हीरा-भस्मयुक्त वज्र रसायन टेबलेट

ये गोलियाँ देह को वज्र के समान दृढ़ व तेजस्वी बनानेवाली हैं। ये त्रिदोषशामक, जठराग्नि व वीर्य वर्धक एवं दीर्घायुष्य-प्रदायक हैं। मस्तिष्क को पुष्ट कर बुद्धि, स्मृति तथा इन्द्रियों की कार्यक्षमता बढ़ाती हैं। ये कोशिकाओं के निर्माण में सहायक हैं।

आम की गिरी (मींगी) का मुखवास पाचक व भूखवर्धक

पोषक तत्त्वों से भरपूर यह मुखवास स्वास्थ्य के लिए अत्यंत आवश्यक विटामिन B12 की कमी को दूर करता है। छाती में जलन, उलटी, जी मिचलाना, कृमि आदि समस्याओं में भी लाभदायी है।

NOURISH विटामिन B12 टेबलेट Prebiotic

✻ जीवनीय तत्त्वों, अमीनो एसिड्स, खनिजों से भरपूर ✻ विटामिन B12 की कमी से उत्पन्न होनेवाली अनेकों गम्भीर समस्याओं से सुरक्षा देनेवाली ✻ पाचनशक्तिवर्धक ✻ प्रौढ़ावस्था व वार्धक्य में विशेष हितकारी

गुटखा, तम्बाकू आदि की लत छुड़ाने के लिए यह मुखवास या टेबलेट लेना हितकर है। (टेबलेट चूसकर लें।)

उपरोक्त सामग्री संत श्री आशारामजी आश्रमों में सत्साहित्य सेवा केन्द्रों से तथा समितियों से प्राप्त हो सकती है। अन्य उत्पादों व उनके लाभ आदि की विस्तृत जानकारी के लिए एवं घर बैठे रजिस्टर्ड पोस्ट द्वारा सामग्री-प्राप्ति हेतु गूगल प्ले स्टोर से डाउनलोड करें : "Ashram eStore" App या विजिट करें : www.ashramestore.com या सम्पर्क करें : (०७९) ६१२१०७६९. ई-मेल : contact@ashramestore.com

RNI No. 48873/91
RNP. No. GAMC 1132/2021-23
(Issued by SSPOs Ahd, valid upto 31-12-2023)
Licence to Post without Pre-payment.
WPP No. 08/21-23
(Issued by CPMG UK. valid upto 31-12-2023)
Posting at Dehradun G.P.O. between 1st to 17th of every month.
Date of Publication: 1st Oct 2023

घर-घर कैलेंडर 'दिव्य दर्शन' अभियान (वर्ष २०२४)

साधकगण एवं युवा सेवा संघ के सेवादार भाई इस अभियान के अंतर्गत साधकों, मित्रों, रिश्तेदारों एवं परिचितों के घर जाकर उन्हें दीवाल दिनदर्शिका (वॉल कैलेंडर) पहुँचाने की सेवा का लाभ लें।

प्राप्ति : संत श्री आशारामजी आश्रमों में सत्साहित्य सेवा केन्द्रों पर तथा श्री योग वेदांत सेवा समितियों एवं साधक-परिवारों के सेवा केन्द्रों पर। ऑनलाइन ऑर्डर हेतु : www.ashramestore.com/calendar सम्पर्क : (०७९) ६१२१०७३२ (साहित्य विभाग), ६१२१०७६१ (युवा सेवा संघ मुख्यालय)

विशेष : प्रति कैलेंडर मूल्य ₹ १५ मात्र। ८ कैलेंडर लेने पर ₹ २० की आकर्षक छूट के साथ आपको देने हैं मात्र ₹ १००!
२५० या इससे ज्यादा कैलेंडर का ऑर्डर देने पर आप अपना नाम एवं फर्म, दुकान आदि का नाम-पता छपवा सकते हैं।
२५० से ९९९ तक छपवाने पर मूल्य ₹ १५.५० तथा १००० या उससे अधिक छपवाने पर मूल्य ₹ १४.५० प्रति कैलेंडर रहेगा।

महिला उत्थान मंडल द्वारा सम्पन्न हुए रक्षाबंधन कार्यक्रमों की एक झलक

ऋषि प्रसाद सम्मेलनों में भगवद्-ज्ञानामृत जन-जन तक पहुँचाने का संकल्प

स्थानाभाव के कारण सभी तस्वीरें नहीं दे पा रहे हैं। अन्य अनेक तस्वीरों हेतु वेबसाइट www.ashram.org/sewa देखें।

आश्रम के मासिक प्रकाशन ऋषि प्रसाद, ऋषि दर्शन व लोक कल्याण सेतु की सदस्यता हेतु स्कैन करें : Rishi Prasad Rishi Darshan Lok Kalyan Setu

स्वामी : संत श्री आशारामजी आश्रम **प्रकाशक** : धर्मेश जगराम सिंह चौहान **मुद्रक** : राघवेन्द्र सुभाषचन्द्र गादा **प्रकाशन-स्थल** : संत श्री आशारामजी आश्रम, मोटेरा, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुजरात) **मुद्रण-स्थल** : हरि ॐ मैन्युफेक्चर्स, कुंजा मतरालियों, पौंटा साहिब, सिरमौर (हि.प्र.)-१७३०२५ **सम्पादक** : श्रीनिवास र. कुलकर्णी